देव दर्शन

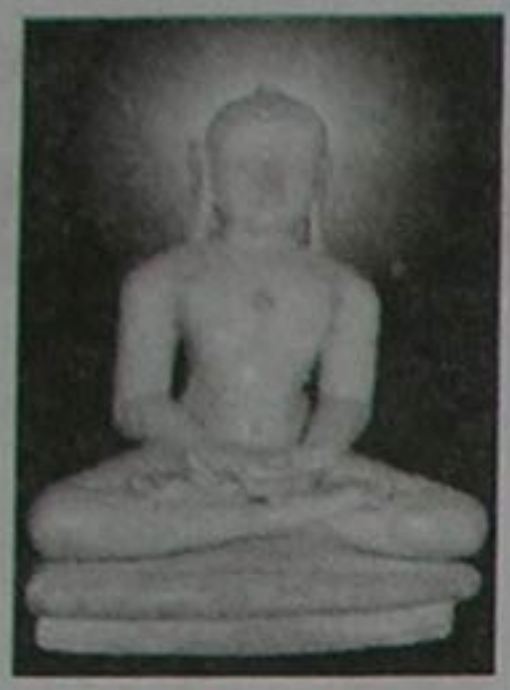

मंदिर के दरवाजे में प्रवेश करते ही बोलें

निःसही, निःसही, निःसही।
ॐ नमः सिद्धेभ्यः। ॐ नमः सिद्धेभ्यः। ॐ नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ जय जय जय नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु।

भगवान के सामने खड़े होकर दोनों हाथ जोड़कर बोलें

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोएसव्वसाहूणं।
एसो पंच्चणमुक्करो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणंचे सव्वेसिं पढ़मं हवई मंगलं।

मंगल पाठ

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तरि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धेसरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

भगवान को तीन प्रदक्षिणा देवें

(बंधी मुट्ठी से अंगूठा भीतर करके चावल चढ़ावे)

अरहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु-ऐसे पाँचों पद बोलते हुए क्रम से बीच में, ऊपर, दाहिनी तरफ, नीचे और बाई तरफ ऐसे पाँच पुँज चढ़ावें।

सरस्वती के सामने

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः ऐसे बोलकर क्रम से चार पुँज लाइन से चढ़ावें।

गुरु के सामने

सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रः

बोलकर क्रम से तीन पुँज लाइन से चढ़ावें।

पुनः हाथ जोड़कर स्तोत्र बोलें

हे भगवान ! नेत्रद्वय मेरे सफल हुये हैं आज अहो।
तव चरणाँबुज का दर्शन कर जन्म सफल हैं आज अहो॥
हे त्रिभुवन के नाथ। आपके दर्शन से मालूम होता।
ये संसार जलधि चुल्लू जल सम हो गया अहो ऐसा॥१॥
अर्हत्सिद्धाचार्य औ पाठक साधु महान।
पंच परम गुरु को नमूं भव भव में सुखदान॥२॥

पुनः विधिवत पृथ्वीतल पर मस्तक टेक कर नमस्कार करें

अर्थः हे भगवन! आपके चरण कमलों का दर्शन करके आज मेरे दोनों नेत्र सफल हो गये है और मेरा जन्म भी सफल हो गया है। हे तीन लोक के नाथ! आपके दर्शन करने से ऐसा मालूम होता है कि मेरा संसार समुद्र अपार था सो आज चुल्लू भर पानी के समान थोड़ा रह गया है। अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पंच परम गुरु भव-भव में सुख को देने वाले हैं, मैं इनको नमस्कार करता हूँ।

मंदिर से बाहर आते वक्त बोलें

अस्सहि, अस्सहि, अस्सहि।